लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
वर्ष 03 अंक 38 लखनऊ। सोमवार 12 से 18 जून-2017
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा-क्या हैं भौतिक शरीर में ऊर्जा

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

(भाग-04)

पिछले 3 (तीन)- अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का सन्चार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते है व क्या लाभ हैं तथा भौतिक शरीर के प्रमुख स्थानों पर चक्रों का क्या महत्व है और इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है, को विस्तार से जानने की कोशिश की थी। इस अंक में, भौतिक शरीर से उत्पन्न उर्जा (आभा) परत कितने होते हैं, इनका क्या महत्व है और इससे शारीरिक स्वास्थ्य में क्या लाभ होगा, को स्पष्ट किया गया है ।

4.0 मानव शरीर में ऊर्जा

संपूर्ण ब्रह्माण्ड में एक अद्भुत और अलौकिक शक्ति विद्यमान है जो कि सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ पर समान रूप से अपना प्रभाव डालती है। अलौकिक चमत्कारी शक्तियां संसार के प्रत्येक मनुष्य में अदृष्य रूप में विद्यमान रहती है जो कि आत्मविश्वास का दूसरा रूप है। संसार की प्रत्येक जड़-चेतन, सजीव-निर्जीव पदार्थ में सर्वव्याप्त उस अज्ञान शक्ति का प्रभाव दूसरी अन्य वस्तुओं पर अवश्य ही परिलक्षित होता है। जिस प्रकार चुम्बक लोहे को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। सृष्टि के समस्त पदार्थ उस सर्वव्यापक और अलौकिक चेतना की शक्ति (औरा)- आभामण्डल के करिश्में से एक-दूसरे को परस्पर प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिक इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को आभामण्डल का नाम देते हैं। संसार के समस्त प्राणियों और ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह-नक्षत्र, समुद्र, सितारों में व्याप्त विद्युत चुंबकीय आभामण्डल की आकर्षण शक्ति के मध्य किसी न किसी प्रकार का घनिष्ठ संबंध अवश्य है। मूल रूप से अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वव्यापक अतींद्रिय शक्तियां आभामण्डल मनुष्य के मन को प्रभावित करती है। निर्विकार, वासनारहित, कामनारहित, दृढ़संकल्पी और सतोगुणी मनुष्य ही अपने औरा आभामण्डल पूर्णतः विकास करके अलौकिक शक्तियों को प्राप्त कर सकता है। अवचेतन मन ही समस्त आभामण्डल की अद्भुत शक्तियों का केंद्र और कोषागार है। संपूर्ण ब्रह्माण्ड में अलौकिक शक्तियों के आभामण्डल का अस्तित्व विद्यमान है और मानव के लिए उन समस्त शक्तियों पर पूर्णतः नियंत्रण स्थापित कर लेना कोई असंभव कार्य नहीं है। प्रत्येक मनुष्य में अन्तःशक्ति होती है और इन्हीं अन्तः शक्तियों को विकसित करके वह अखिल ब्रह्माण्ड में बह रही अलौकिक चमत्कारी शक्ति आभामण्डल की धारा से संपर्क स्थापित करके उससे अंश प्राप्त करके अलौकिक शक्तियों का स्वामी बन सकता है। वैज्ञानिकों ने गहन अनुसंधान के पश्चात यह सिद्ध किया है कि मनुष्य का मात्र एक शरीर ही नहीं होता है अपितु इस भौतिक शरीर के अतिरिक्त प्रकाशमय और ऊर्जावान एक शरीर और है जो आभाओं से घिरी हुयी है ।

हम पहले जान चुके हैं कि भौतिक शरीर जिसे आप स्पर्श कर सकते हैं और दर्पण में दिखाई देती है, के आसपास मौजूद प्रत्येक सूक्ष्म शरीर की अपनी अनूठी आवृत्ति होती है। वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और एक दूसरे और व्यक्ति की भावनाओं, सोच, व्यवहार और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। भौतिक शरीर से उत्पन्न उर्जा की आवृत्त को आभा कहते हैं। आभा- भौतिक शरीर के चारो ओर कई स्तरों/परतों (ब्मससे) से मिलकर आती है । इसलिए इन आभा परतो में से किसी एक में असंतुलन की स्थिति दूसरों की असंतुलन को जन्म देती है।

4.1 मानव शरीर में ऊर्जा के कवच (परते)

मानव शरीर में ऊर्जा की सात परतें होती हैं। पहली परत आपकी भौतिक शरीर स्वंय है अर्थात शरीर जिसे आप स्पर्श कर सकते हैं और दर्पण में देख सकते हैं । ऊर्जा की बाहरी 6 (छः)- परतें, जो इस पहली परत को घेरती हैं, सामान्यतः आपके चमक के रूप में सामूहिक रूप से जानी जाती हैं। साथ में, ये सात - परतें या ऊर्जा आवरण/निकाय- मानव ऊर्जा क्षेत्र हैं और एक ऊर्जा चिकित्सक - मानव ऊर्जा क्षेत्र के भौतिक परत के साथ-साथ सभी परतों का मूल्यांकन और व्यवहार का पता कर सकता है, उसको आवश्यक चिकित्सकीय लाभ पहुंचा सकता है ।

कोई भी व्यक्ति अपने शारीरक ऊर्जा (आभा) के भेदन शक्ति के अनुसार दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे और सातवें परतों को देख सकता है। इसके अलावा, वे सभी परतें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के लिए अलग-अलग दिख सकते हैं और उन सभी परतों को भी अलग-अलग तरीकों से देख सकते है, जिनमें तीसरी आंखों (जीपतक मलम) के दृश्य को शामिल नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए - उनकी ऊर्जा- स्पर्श, सुगंध, या ध्वनि के माध्यम से महसूस होती है। ये सभी जीवित ऊर्जा हैं, जिसमे एक नाड़ी है, जिससे उन्हें महसूस कर मापा जा सकता है।

4.2 मानव ऊर्जा क्षेत्र के सात (7) - कवचों (परतों) का महत्व

आभा सात स्तरों/परतों से मिलकर आती है। भौतिक शरीर के आसपास मौजूद प्रत्येक सूक्ष्म शरीर की अपनी अनूठी आवृत्ति होती है। वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और एक दूसरे और व्यक्ति की भावनाओं, सोच, व्यवहार और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। इसलिए आभा परतो में से किसी एक में असंतुलन की स्थिति दूसरों की असंतुलन को जन्म देती है।

●भौतिक ऊर्जा शरीर - यह वह परत है जिसे हम आम तौर पर हमारे भौतिक स्वयं के रूप में सोचते हैं। यद्यपि हम शरीर, हड्डी, अंगों और रक्त से मिलकर पैकेज के रूप में हमारे शरीर के बारे में सोचते हैं, हमारे भौतिक शरीर भी ऊर्जा हैं, शरीर के अन्य परतों के समान, जो कि अधिकांश लोग भौतिक स्तर पर नहीं देख सकते हैं या समझ सकते हैं। भौतिक शरीर आभा मुख्यतः शारीरिक उत्तेजना सरल शारीरिक आराम, सुख, स्वास्थ्य का सूचक है।

●ईथरिक आभा शरीर - हमारी ऊर्जा आवरण् / निकाय की दूसरी ईथरिक परत भौतिक शरीर से लगभग एक चौथाई अथवा आधा इंच (एक इंच से अधिक नहीं) स्थित है। ऊर्जा चिकित्सक, जो कि मानसिक रूप से इस परत को संवेदन करने में माहिर हैं, ने इसे 'वेबबी' महसूस कर दिया है। एक मकड़ी की तरह बहुत सारे वेब, यह चिपचिपा, या खिंचाव लगता है। यह रंग में भूरे या भूरे रंग के नीले भी होते हैं । ईथर ऊर्जा शरीर को भौतिक शरीर के खाका या होलोग्राफ के रूप में भी संदर्भित किया गया है। ईथर आभा शरीर मुख्यतः स्वयं के संबंध में भावनाएं आत्म-स्वीकृति और आत्म प्रेम को दर्शाता है ।

●महत्वपूर्ण आभा शरीर - हमारे ऊर्जा शरीर का यह तीसरी परत है । इस ऊर्जा परत के माध्यम से तर्कसंगत मन को समझने के लिए एक स्पष्ट, रैखिक, तर्कसंगत तरीके से स्थिति को खीचना संभव होता है ।

●भावनात्मक ऊर्जा शरीर - हमारे ऊर्जा शरीर की भावनात्मक परत चौथी परत है । सात परतों के बीच स्थित यह परत हमारे शरीर में भावनाओं का रक्षक है। यह ऐसे स्थान पर है जहां हमारे दोनों भय और उत्साह रहते हैं । जब हम चरम विन्दु पर उच्च और निम्न भावनाओं का अनुभव कर रहे होते हैं तो यह परत काफी अस्थिर हो सकती है। भावनात्मक आभा शरीर, एक - दूसरों के साथ अच्छे संबंध रखने और दोस्तों और परिवार के साथ प्रेमपूर्ण बातचीत करने का प्रेरक है ।

●कम मानसिक आभा शरीर - यह ऊर्जा शरीर की दैवीय शक्ति कवच पांचवी परत है। इससे मानसिक आभा शरीर में दैवीय शक्ति भीतर समाहित होती है और भीतर की इच्छा को संयमित/संरेखित कर मनुष्य को बोलने और सच्चाई का पालन करने के लिए उसमे एक प्रतिबद्धता बनाती है ।

●उच्च मानसिक ऊर्जा शरीर - यह उच्च मानसिक परत ऐसे स्थान पर है, जहां से हमारे विचार वसंत खिलते अथवा अति प्रफुल्लित होते हैं। हमारी विश्वास प्रणाली यहां पर संग्रहीत हैं । यह वह जगह है, जहां हमारे विचार आत्मसात और हल किए जाते हैं। इस परत में, हमारे व्यक्तिगत सत्य ही नहीं बल्कि, हमारे अनुभवों के आधार पर हमारी धारणाएं केन्द्रित होती हैं। उच्च मानसिक आभा शरीर से ईश्वरीय प्रेम और आध्यात्मिक परमानंद की अनुभूति होती है ।

●आध्यात्मिक ऊर्जा शरीर- मानव ऊर्जा क्षेत्र की आध्यात्मिक परत अंतिम परत है, ऐसा कहा जाता है कि, जहां हमारी 'चेतना' अथवा 'उच्च जागरूकता' विद्यमान रहती है। इस आध्यात्मिक आभा शरीर से दिव्य मन, शांति दिव्य मन से जुड़े होने के कारण, और अधिक सार्वभौमिक पैटर्न को समझने में सामर्थ्य प्रदान करता है ।

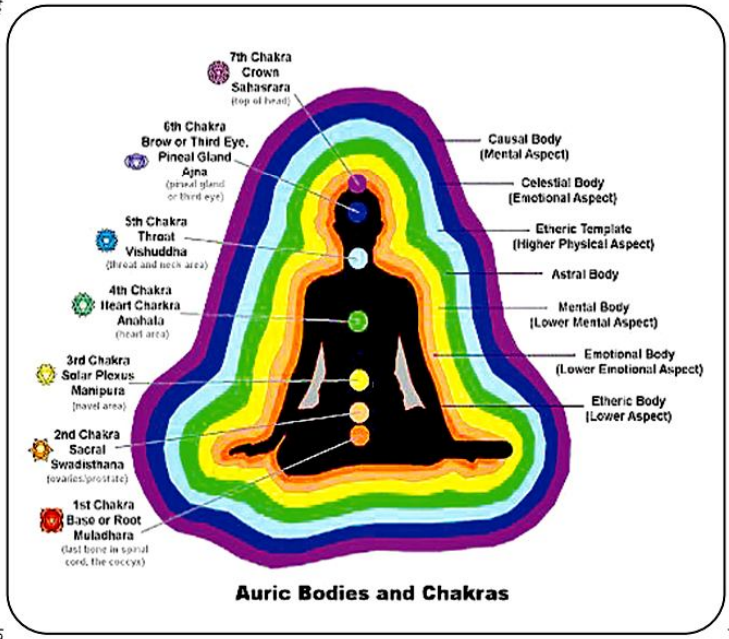

Auric Bodies and Chakras

हमने पूर्व अंक में, यह जानकारी ग्रहण की थी कि मानव ऊर्जा क्षेत्र वास्तव में, कई अलग-अलग रंगीन बैंडों से बना था, जो विभिन्न चक्रों से संबंधित था । इस पर वैज्ञानिको ने फरवरी, 1981 के अध्ययन से यह परिणाम निकाला है कि शारीरिक चक्रों की तरंगों, जो हर्ट्ज प्रति सेकंड में मापी जाती है, और रंग आवृत्ति में सह-संबंध है, जिसे नीचे दिखाया गया है-

ब्लू 250-275 हर्ट्ज प्लस 1200 हर्ट्ज
ग्रीन 250-475 हर्ट्ज
पीला 500-700 हर्ट्ज
ऑरेंज 950-1050 हर्ट्ज
लाल 1000-1200 हर्ट्ज
वायलेट 1000-2000 प्लस 300-400य 600-800 हर्ट्ज
सफेद 1100-2000 हर्ट्ज

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि शारीरिक चक्रों व रंगों के बैंडो/परतो में गहरा सम्बन्ध है और इसका सीधा सम्बन्ध मानसिक स्थिति, अच्छे विचार और स्वास्थ्य पर पड़ता है। अगले अंक में इस पर विस्तृत चर्चा की जाएगी ।